Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:6(3), June 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

मॉरिशस, फिजी और सूरीनाम में हिंदी पत्रिकाओं के द्वारा भाषा और संस्कृति का विकास

Dr. B. Laxmi, Associate Professor

Head of the Department of Hindi

Dr. V. S. Krishna Govt. Degree College (A) Visakhapatnam

उन्नीसवीं सदी के प्रारंभ में अंग्रेजो द्वारा देश के विभिन्न क्षेत्रों से बडी संख्या में श्रमिकों को मॉरिशस, फिजी और सूरीनाम जैसे विभिन्न उपनिवेशों में लाया गया था । श्रमिकों के साथ हमारी भारतीय संस्कृति, भाषा और परंपराएँ भी विदेश पहुँची । ये श्रमिक ही गिरमिटिया कहलाएँ । यही भारतीय प्रवासी, कठिन परिस्थितियों का सामना करते हुए देश की परंपरागत सांस्कृतिक धरोहर को नई सर-जमीन में विकसित करने में अपना महत्वपूर्ण स्थान स्थापित किये। वहाँ विदेश में आपसी संवाद, सूचना, एकता और जागरण के लिए एक आधार और मंच के बतौर पत्रकारिता को बढावा दिया गया । हिंदी पत्रकारिता ने विदेशों में हिंदी साहित्य और भाषा के संरक्षण में विशेष योगदान दिया। धार्मिक संस्थाओं और सांस्कृतिक संगठनों के विकास में हिंदी पत्रकारिता ने वर्चस्व स्थापित किया । हिंदी पत्र-पत्रिकाएँ केवल समाज को समाचार देने का माध्यम नहीं थीं, बल्कि वे प्रवासी समाज की सांस्कृतिक संचेतना, सामाजिक जागरूकता और राष्ट्रीयता की भावना की अभिव्यक्ति का मंच बन गई। मॉरिशस, फिजी और सूरीनाम जैसे देशों में हिंदी पत्रकारिता ने प्रवासी भारतीयों के बीच सांस्कृतिक पुनर्जागरण की प्रक्रिया को गति दी। गिरमिटिया श्रमिक विदेश में अपने साथ भोजपुरी, अवधी, मगही और अन्य बोलियाँ लेकर गए। इन बोलियों में हिन्दी भाषा के मेल से एक नई भाषाई संस्कृति विकसित हुई । हिंदी भाषा के आधार पर प्रवासी भारतीयों के बीच एकता और सांस्कृतिक नींव मजबूत बन गयी। हिंदी केवल भाषा नहीं थी, बल्कि प्रवासी भारतियों की **सांस्कृतिक पहचान का** मूल स्तंभ थी। हिंदी पत्र-पत्रिकाओं ने समाज के बौद्धिक विकास के साथ-साथ सांस्कृतिक मूल्यों के संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई ।

मारिशस में हिन्दी पत्रकारिता -

मारिशस में हिन्दी पत्रिका **हिन्दुस्तानी** 1910 में प्रारंभ हुआ। जिसके मुखपृष्ठ का आदर्श था -**"व्यक्ति की स्वतंत्रता ! मनुष्य की समानता ! जातियों का भाईचारा !"** हिन्दी पत्रकारिता के विकास में हिन्दी परिषद, आर्य परोपकारिणी सभा, हिन्दी प्रचारिणी सभा, आर्य प्रतिनिधि सभा, हिन्दी लेखक संघ, महात्मा गांधी संस्थान, हिन्दी शिक्षक संघ, हिन्दी संगठन जैसे संस्थानो का योगदान अविस्मरणीय है।

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:6(3), June 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

मारिशस में **आर्य** पत्रिका द्वारा वैदिक धर्म का प्रचार हुआ और हिन्दी भाषा और साहित्य को संबल प्राप्त हुआ । **आर्यवीर** पत्रिका का उद्देश्य -"स्वजाति देश और धर्म की रक्षा था । हस्तलिखित पत्रिका **दुर्गा** में साहित्यिक रचनाएँ, मारिशस का इतिहास, हिन्दू धर्म और संस्कृति, हिन्दी भाषा तथा साहित्य, भारतवासियों की मारीशसियता को दिखाने के लिए कि पाठको को बताना कि, **हिन्दी कैसी जानदार और शानदार भाषा है** । इस पत्रिका द्वारा मारिशस के हिन्दू नवयुवकों को कर्म-पथ पर अग्रसर करना, हिन्दी धर्म का रहस्योद्घाटन करना और हिन्दी-हिन्दी-हिन्दी के नाद से दिग्दिअगंत करना जैसे कई अंश थे । (विदेश में हिन्दी पत्रकारिता पृष्ठ-10)

दुर्गा पत्रिका के माध्यम से अनेक विधाओं का शुभारंभ हुआ - गद्यगीत, संस्मरण, नाटक, अनुवाद, हिन्दी भाषा, स्त्री रक्षा, देश-भक्ति, सामाजिक सतर्कता जैसे विषयों में लेखन आदि । हिन्दी भाषा के प्रोत्साहन हेतु किया गया कुछ उद्दहरण इस प्रकार है - "फ़रवरी 1935 की प्रति में -"शुद्ध हिन्दी का शंखनाद टापू के कोने -कोने में कीजिए" । फ़रवरी 1935 की प्रति में - हिन्दुओं ! औरतों को इज्जत की दृष्टि से देखो, माता के समान पूजा करो, बहन के समान प्रेम करो, बन पडे तो अपने प्राण भी दे दो । अप्रैल 1935 की प्रति में- यदि आप हिन्दुस्तानी होने का दावा रखते है तो....हिन्दुस्तानी माल खरीदिए । जून 1935 की प्रति में - धार्मिक कट्टरता और अंधविश्वास को दूर से नमस्कार कीजिए मौलिक और साफ़ सुंदर अक्षरों में लिखिए।" (विदेश में हिन्दी पत्रकारिता पृष्ठ-12)

जागृति,नवजीवन,स्वदेश,इंद्रधनुष, आक्रोश, जनवाणी, अनुराग पत्रिका में स्वामी विवेकानंद, स्वामी दयानंद सरस्वती, श्रीकृष्ण के जीवन से शिक्षा, नारी और मानव सभ्यता जैसे अंशों पर लिखा गया ।

वसंत पत्रिका संपूर्ण विश्व में हिन्दी लेखको का मंच है परंतु मारिशस के लेखको का स्वर है । इसमें मानव मूल्यों की खोज साथ ही प्रति व्यक्ति को स्वर दिया गया और **रिमझिम** पत्रिका में बालोपयोगी पहेलियाँ, कोष्टक, चक्ल्लस पहेली, 'हिन्दी पढिए,समझिए और लिखिए' आदि स्तंभ के संपादक मारिशस के प्रेमचंद **अभिमन्यु अनंत** है । **पंकज** पत्रिका के प्रत्येक अंक के मुख पृष्ठ में **"भाषा गई तो संस्कृति गई"** का स्वर था जो पाठको पर विशेष प्रभाव डालने के लिए अंकित किया जाता था ।

विश्व समाचार और **विश्व हिन्दी पत्रिका** में हिन्दी की प्रमुख गतिविधियों, कार्यक्रमों सम्मेलनों, प्रकाशन के समाचार प्रकाशित होते है। डा. राजेन्द्र प्रसाद मिश्र ने अपने संपादकीय 'साथ चल" में लिखा था - " इस प्रकाशन के माध्यम से विश्व हिन्दी सचिवालय का यह विनम्र प्रयास रहेगा कि संपूर्ण विश्व में चल रही गतिविधियों से सभी हिन्दी प्रेमियों को समय -समय पर अवगत कराता रहे....इसके माध्यम से पूरी दुनिया का हिन्दी समुदाय, हिन्दी की

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:6(3), June 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

विकास यात्रा के विभिन्न पडावों और भावीं संभावनाओं से परिचित होता रहेगा । इस पत्रिका में 'हिन्दी के स्वरूप, हिन्दी साहित्य, भारतीय संस्कृति, हिन्दी शिक्षण, सूचना संचार एवं प्रौद्योगिकी के क्षेत्र में हिन्दी' आदि अंशों को जोडा गया।

फ़ीजी में हिन्दी पत्रकारिता -

फ़ीजी एक बहुजातीय और बहुसंस्कृति का देश है । यहां के संविधान में हिन्दी को फ़ीजियन और अंग्रेजी के साथ **राजभाषा** का दर्जा दिया गया । फ़ीजी में हिन्दी का विकास पश्चिमी उत्तरप्रदेश और पूर्वी बिहार से आये गिरमिटिया भारतीय ने किया । ये गिरमिटिया दिन भर की कडी मेहनत के बाद रात को तुलसी के रामचरित मानस की चौपाइयां पढते, हारमोनियम, ढोलक, तंबूरे और खंजडी के साथ कबीर, मीरा तथा सूरदास के भजन गाकर दिन भर की थकान दूर करने की कोशिश करते थे । परोक्ष रूप से हिन्दी पढते, सीखते व हिन्दी भजन गाकर हिन्दी का अभ्यास करते थे । (विदेश में हिन्दी पत्रकारिता पृष्ठ-53)

फ़िजी समाचार, वृद्धि, वृद्धि वाणी,सनातन धर्म,वैदिक संदेश, जागृति, आवाज,झंकार तारा, जय फ़ीजी, राजदूत,विजय पत्रिकाओं में प्रवासी भारतियों को हिन्दी भाषा के प्रति जागृत करने का प्रयास दृष्टिगत है । साप्ताहिक अखबार **शांतिदूत** में रामायण मंडलियों की गतिविधियों को प्रधानता दी गई । हर त्योंहार पर सुंदर विशेषांक प्रकाशित कर सभी धर्मों के प्रति समभाव तथा पारस्परिक समझ का वातावरण बनाया गया । (विदेश में हिन्दी पत्रकारिता पृष्ठ-59)

शांतिदूत पत्रिका में दिपावली विशेषांक में दिपावली के साथ ही भारतीय संस्कृति, त्योहारों और परंपराओं पर विशेष लेख प्रकाशित हुई । फ़लस्वरूप हजारों लोगों ने हिन्दीं सीखी । **सनातन संदेश** पत्रिका के आधार पर सनातन धर्म के संदेश को जन-जन तक पहुंचाना था । **उदयाचल** पत्रिका का हिन्दी भाषा, साहित्य, कला और संस्कृति की उन्नति में अविस्मरणीय योगदान है । इस प्रकार हिन्दी पत्र-पत्रिकाओं के प्रकाशन से हिन्दी पत्रिकारिता का एक अनुपम, प्रभावपूर्ण तथा दर्घकालिक इतिहास निर्मित हुआ । हिन्दी को जागृत करने तथा भारतियों को एक सूत्र में बांधने में पत्र-पत्रिकाओं का अमूल्य योगदान है ।

सूरिनाम में हिन्दी पत्रकारिता -

दक्षिण अमेरिका के उत्तर में स्थित देश सूरिनाम की राजधानी पारामारिबो है । पारामारिबो का अर्थ फ़ूलों का शहर है । लालरूख जहाज से सन 1873 में भारतीयों का मजदूर के रूप में सूरीनाम में आगमन हुआ । 21 मार्च को सूरीनाम में हिन्दी दिवस मनाया जाता है । **जागृति, हर्ष, जीवन, पुरवाई, लालरूख, सरस्वती, भारतोदय, धर्मप्रकाश, वैदिक संदेश, प्रेम संदेश, प्रकाश, भासा और वैदिक जीवन** जैसी अनेक पत्रिकाओं में भाषा संस्कृति ,वैदिक प्रचार तथा अन्य

Cover Page

INTERNATIONAL JOURNAL OF MULTIDISCIPLINARY EDUCATIONAL RESEARCH
ISSN:2277-7881(Print); IMPACT FACTOR :10.16(2026); IC VALUE:5.16; ISI VALUE:2.286
Peer-Peer Reviewed, Refereed & Open Access International Journal - As per UGC Norms
(Fulfilled Suggests Parameters of UGC by IJMER)
Volume:15, Issue:6(3), June 2026
Scopus Review ID: A2B96D3ACF3FEA2A
Article Received: Reviewed: Accepted
Publisher: Sucharitha Publication, India
Online Copy of Article Publication Available: www.ijmer.in

विषयों पर लिखा गया । 1964 में **आर्य दिवाकर** नामक पत्रिका में आर्य समाज से संबंधित विषय है । **शांतिदूत** और **सेतुबंध** पत्रिकाओं में लोगो को हिन्दी पढने के साथ-साथ लेखन के लिए प्रोत्साहित किया । सूरिनाम हिंदी परिषद की ओर से **सूरीनाम दर्पण** का प्रकाशन 1985 में हुआ। इस पत्रिका का मुख्य आदर्श - "हिन्दी पढों ही नहीं वरन लिखों भी" पत्रिका का मुख्य उद्देश्य इस प्रकार स्पष्ट किया गया -"सूरीनाम दर्पण में अपनी राजभाषा डच एवं व्यवहरित सरनामी हिन्दी में रचनाएँ प्रकाशित करने की योजना है, जिससे इन सभी वर्गो एवं व्यक्तियों से अपना साहित्यिक एवं सांस्कृतिक संबंध अक्षुण्य है"। (विदेश में हिन्दी पत्रकारिता पृष्ठ-73) सूरिनाम हिंदी परिषद द्वारा हिन्दी परीक्षाओं का संचालन किया गया और हिन्दी अध्यापकों को सम्मानित भी किया गया। इस प्रकार 1998 में सूरीनाम दर्पण के विशेष अंक में 125 वर्ष प्रवासी भारतीयों की यात्रा विशेषकर हिन्दी के प्रचार-प्रसार और प्रयोग को रेखांकित किया गया । सूरीनाम में हिन्दी आलेख में हिन्दी की पढाई, मीडिया में हिन्दी, हिन्दी लेखन आदि पर विस्तार से वर्णन है।

सन 2003 में **शब्द शक्ति** नामक पत्रिका सूरीनाम साहित्य मित्र संस्था द्वारा निकाली गयी । पत्रिका में निम्न उद्देश्यों को प्रस्तुत किया गया - जिसके अंतर्गत भारतीय संस्कृति के द्वारा धर्म-संस्कृति का प्रचार करना, अपनी बातें अपने संबंध देवनागरी लिपि में लिखना-पढना सीखे ताकि भारतीय संस्कृति की पुसतके हम सब पढना जान सके , हिन्दी भाषा को जानकर हम अपने धर्म, पूजन, मंदिर और संस्कारों की गहराई को जान सकें । (विदेश में हिन्दी पत्रकारिता पृष्ठ-75)

सूरीनम में 6 रेडियो स्टेशन में हिन्दी कर्यक्रमों का प्रसारण किया जात है । इस प्रकार हिन्दी पत्रकारिता द्वारा भाषा और संस्कृति का ऎतिहासिक दीर्घकालिक विकास मारिशस फ़ीजी और सुरीनाम में अद्वितीय है । साथ ही प्रवासी भारतीयों को हिन्दी पत्रिकाओं द्वारा एक सूत्र में बांधकर रखने में सकारात्मक योगदान अमूल्य है। हिन्दी भाषा और साहित्य को जागरूक रखने में प्रवासी संस्थानों साहित्यकारों और विद्वानों का समर्पण सराहनीय है।

संदर्भ ग्रंथ -

- विदेश में हिन्दी पत्रकारिता - जवाहर कर्नावट
- मारिशस में भारतियों का इतिहास - के हजारी सिंह
- विदेशी विद्वानों का हिन्दी प्रेम- जगदीश प्रसाद बरनवाल कुंद'
- प्रवासी साहित्य - तेलुगु मल्लि